मेले में चलते फिरते नजर आयें

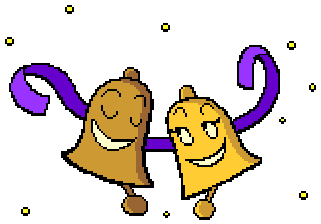

Fish Photo Caption

आज दशहरा है । इसकी सूचना देने के लिये चौरहे पर 30 माइक्रो फोन अपनी पूरी क्षमता के साथ चिंघाड़ रहे हैं । 15 माइक्रो फोन से "चलो बुलावा आया है" का आलाप निकल रहा है और बाकी 15 इस जिम्मेदारी के साथ कि इस मेले में युवा पीढ़ी की अधिक्ता है इसलिये "चढ़ गया ऊपर रे" का उदघोष कर रहे हैं । क्षमता के अनुसार फ्यूज ट्यूब लाइटें एवं बल्ब लगाये गयें हैं । जो पूरी उर्जा के साथ प्रकाशित हो रहे हैं । ओवरलोड के कारण मुख्य सड़क को छोड़ कर आधे मुहल्ले में लाइट गायब है । दुष्ट रावण का वध हुआ था इसलिये सामान्य नागरिकों की तरफ से रावण की हत्या के लिये उर्जा का दान कर दिया गया है ।

गाना बीच में ही रोक कर एनाउंसमेंट शुरू हो गया है और बोलने वाला अपनी वाक कला का प्रदर्शन करने लगा है ।

"हैलो ! ये अमृत लाउडस्पीकर कंपनी के सौजन्य से मैं जगपतलाल बोल रहा हूँ । आप सब का मेले में स्वागत है । कृपया जैसे कि पिछले मेले में आपको बताया गया था कि मेले में चलते फिरते नजर आयें सो इस मेले में भी चलते फिरते नजर आयें । मेला आपका है और आप लोग मेले की छटा निहारते हुये चलते जाइये । बल्लियों में जैसा कि हर साल होता है 440 वोल्ट का करंट दौड़ रहा है अतः उनको छू कर सच्चाई की परख करने की जरूरत नहीं है क्योंकि सच्चाई इस साल भी कड़वी ही निकलेगी । "हाँ, हाँ, बोल रहा हूँ, जरा चुप रह" । "कल्लू । कल्लू कुमार । आप जहाँ कहीं भी हो अमृत लाउडस्पीकर के मंच तक पहुंच जायें आपके दोस्त प्यारे मोहन और चीकू आपका इंतजार कर रहे हैं

।" "ये चार साल की बच्ची जो लाल रंग का फ्र ांक और नीले रंग का ब्लाउज पहने है, बाप का नाम ननकू राम बताती है जिसकी भी हो यहाँ आके ले जाये । बच्ची बुरी तरह रो रही है और हम उसे चुप नहीं करा पा रहे हैं ।"

"मुकुल तिवारी आप अगर हमरी आवाज सुन रहे हो तो मंचवा के करीब आ जाओ और चंदे की रसीद लेई आओ ।"

"मेरा पुलिस वालों से अनुरोध है (हिक्क) कि झूले के पास जल्दी से जल्दी (हिक्क) पहुँच (हिक्क) जायें । (अबे इसे हटाओ ज्यादा पी गया है) "हाँ भइया पुलिस वाले झूले के नजदीक पहुँच जायें वहां पर महिलाओं और बच्चियों के साथ छेड़ा छाड़ी चल रही है । धन्यवाद ।"

'देखिये बहुत बत्तमीजी हो रही है । हमारी नहीं तो वर्दी की लाज रखिये । कमेटी की तरफ से आपसे अनुरोध है कि आप लोग तत्काल उन लोफरों के हाथ पैर तोड़ दें ।'

इस बीच सारी भीड़ एक तरफ हट गई । बिना सजे संवरे पाँच ऊंट पधारे उसके पीछे एक हष्ट पुष्ट बैल एक चौकी खींचते हुये पहुंच रहा है । उस पर नकली लटकती दाढ़ी मूँछ और पीली धोती लपेटे एक ऋषी मुनि अपनी उदार मुद्रा में भीड़ को आतंकित करते हुए देख रहे हैं । बैठे वे एक टूटे हुये स्टूल पर हैं । इस चौकी को एक गिलास गिफ्ट किया गया अमृत लाउडस्पीकर वालों की तरफ से ।

उसके पीछे एक चौकी है जिस पर शिवजी विराजमान है । हाय! क्या बांके शिवजी हैं । पीले कलर की छींटेदार लुंगी को मृगचर्म की तरह लपेटे है । जाहिर है पूरा शरीर नहीं ढ़का है । उनकी बिना बाल वाली देह को भक्तों के एक वर्ग ने खासा पसंद किया । 'ओये शिवजी चिक्कन है बे' । शिवजी अचानक बैठे बैठे पीठ खुजलाने लगे क्योंकि कीड़ों को भी उनकी कोमल चमड़ी पसंद आ गई थी । इस चौकी को भी एक गिलास प्रदान किया गया ।

"वाह किया चौकी है । वाह भाई ! वाह क्या बात है । बहुत अच्छे, भाई क्या

कहना । आप लोगन ने बहुतई सुंदर चौकी का निमार्ण किया है । आप लोग अपना पूरा प्रदर्शन कीजिये ।”

चौकी जो अब आ रही हे वो माँ वैष्णो देवी की भैरों वध का प्रदर्शन कर रही है । एक आदमी उस पर सिविल ड्रे स में खड़ा लग्गी लेकर बिजली के तार रास्ते से हटा रहा है । माँ वैष्णो देवी शांत मुद्रा में त्रिशूल धारण किये खड़ी हैं । सामने भैरव किसी हनुमान टाईप लड़के के साथ युद्ध कला का प्रदर्शन कर रहा है । दोनो रामानंद सागर से सीख लेकर पहले पांच मिनट तक लड़े । माँ का सिंह भी पूरे मेकअप में खांस रहा था । उसका मुखौटा बढ़िया था पर वह जरा ढ़ीला था इसलिये वह भैरो को एक बार पंजा दिखाता था और एक बार मुखौटा सही करता था । अचानक माँ आकाशवाणी करती हुई उठ खड़ी हुईं । उन्होंने हनुमान टाइप लड़के संबोधित किया ‘ये दुष्ट तुमसे नहीं मरेगा । इसका वध मेरे हाथों होगा ।’ वह लाललंगोटधारी अपने पार्ट से संतुष्ट होकर अपनी जगह बैठ गया । माँ ने गत्ता का त्रिशूल उठा कर उस दुष्ट का काम तमाम कर दिया । इस चौकी को एक गिलास और थाली दी गई । जो सहर्ष स्वीकार कर ली गई ।

उसके पीछे जो चौकी आ रही है वह पुलीस चौकी से निकली है । दो पुलीस वाले दो ऊंचे घोड़े पर बैठे शांति व्यवस्था बनाने के लिये निकले हैं । उन्हें देखने में दर्शकों ने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई । इसका एक कारण उनकी तेल पी हुई लाठी और तनी हुई भौहें हैं । अगर वे एक तख्ती पर रावण और कुंभकरण लिख आये होते तो उनको भी एक गिलास तो मिल ही जाता । आजकल पुलीस वालों में धर्म का लोप हो रहा है जिसका यह सीधा उदाहरण है ।

उनके पीछे की चौकी है बालि सुग्रीव युद्ध की । दानों में से कौन बालि है और कौन सुग्रीव कुछ पता नहीं । पर एक के हाथ में टाइटन की घड़ी झलक रही है । शायद रामजी के पास फूल की माला नहीं थी तो अपनी घड़ी सुग्रीव को दिये हुये हैं । ‘देखो मैं ठीक पौने तीन बजे तीर चला दूँगा । तुम घड़ी पहन लो उससे मैं तुम्हें पहचान लूंगा ।’ पर रामजी फरार थे और दोनों योद्धा जो कि बानर कम राक्षस ज्यादा लग रहे थे एक गिलास और चम्मच के लिये जोरदार

मल्ल युद्ध का भावभीना प्रदर्शन कर रहे थे । और मिला भी कटोरी प्लेट मिल गयी । अब थोड़ा दर्शक वर्ग नजर डाली जाये ।

दर्शक जैसा कि आमतौर पर होते हैं – मध्यमवर्गीय औरतें, बच्चे, लड़कियां और उनको घूरते मध्यम वर्गीय युवकगण । हाई हील की सैंडिलें पहनी नाटी लड़कियां, गाढ़े रंग सस्ती लिपिस्टिक की पर्तें, स्नो पावडर से पुते चहरे, चटकीले, भड़कीले रंग की साड़ियां, लंहगे–चुनरियां । कसी जींस, गाढ़े रंग की शर्ट, चहरे तुरंत बनी शेव से दमकते हुये, एक चौथाई मुँह कच्ची की महक का अन्तर्राष्ट्रीयकरण करते हुये । लंबे बालों पर उंगली फिराते हुये और किसी नयनाभिराम अप्सरा के पर्यटक स्थलों का नजरों से दौरा करते हुये, उस पर अपनी अभिव्यिक्त की स्वतंत्रता का सदउपयोग करके कुछ नितांत मार्मिक टिप्पणियां शोभित करते हुये मेले में चलते फिरते नजर आ रहे हैं । अधिक्तर श्रद्धालू चौकी देखने नहीं बल्कि महिलायें देखने, परखने व नारियाँ पुरूष भक्तों पर अपने मेकअप का असर व पावडर, लिपिस्टिक की सार्थकता परखने आयी हैं ।

तीन बेठियों का बाप खंभे के पीछे और तीनों आत्मजाओं के रक्षार्थ उनके आगे खड़ा है । भीड़ भरपूर है और शोहदों की उपस्थिति देश की जनसंख्या के अनुरूप है । तीनों दिव्य कन्यायें बाप की पीठ पीछे भुनी हुयी मूँगफली को सम्मानित करते हुयी उन्हें टूंग रहीं हैं और हसरत भरी निगाह मुझ पर गड़ायें हैं । पर मैं उस जनक के रौद्र रूप के वशीभूत कायरता पूर्ण भाव से वहां से भारी कदमों से आगे बढ़ गया । मेला अभी खत्म नहीं हुआ है ।

चाट की दुकान पर दो सांवले दंपत्ति बैठे फुल्कियाँ भकोस रहे थे । महिला चटकीली साड़ी में और लिपिस्टिक का इस दर्शन के साथ कि जितनी है आज लगा ली जाये, लपेटे बैठी है और तीव्र वेग से फुल्कियाँ ग्रहण कर रही है । फल्की का पानी होठों से लिपिस्टिक का प्लास्टर उखाड़ता हुआ नीचे की ओर बह रहा है । पतिश्री चाट वाले से बहस कर रहे हैं । 'आठ फुल्की अभी नहीं हुई हैं सात खिलाई हैं । एक और दो ।' और फिर दोनो पक्षों द्वारा गणना में हुई गलती का विश्लेषण किया गया और गणना की पद्धत्तियों को सार्वजनिक रूप से

दुत्कारा गया ।

दुकाने बहुत सारी थीं । खोंमचे थे, मूँगफली, चुरमुरा । चाट के व पपड़ियों के ठेले । गुब्बारे वाले, खिलौने वाले । सभी दुकानदार यह मानते हुये कि अस्सी प्रतिशत लोग चोर होते हैं अतः पूरी सतर्कता के साथ व्यवसाय में संलग्न थे । पोस्टर सड़क के किनारे लगे थे । एक तरफ ममता कुलकर्णी, रानी मुखर्जी, काजोल मुस्कुरा कर परीक्षा ले रही थीं तो दूसरी तरफ सलमान शर्ट फाड़े खड़े थे । आमीर सलमान की नंगई पर मुस्कुरा रहे थे । अक्षय नयीं जींस की फिटिंग दिखा रहे थे । जमीन पर शिवजी पावर्ती और गणेश जी के साथ छोटा परिवार सुखी परिवार का नारा बुलंद कर रहे थे । बजरंगबली पर्वत उठाये पोज दे खड़े थे । राम, कृष्ण भी स्थान बनाये हुये थे । उन्हीं के बगल में कुछ पोस्टर विदेशी माताओं के भी थे । वहाँ ठंडी ज्यादा पड़ती है इसलिये वे धूप सेंक रही थीं । धूप सेंकने के परिधान कुछ खास नहीं होते हैं । नाम मात्र के वस्त्र जो कि उनके लिये तो बहुत कम थे पर उन पोस्टरों के दर्शनार्थियों को उन वस्त्रों की उपस्थिति अखर रही थी । ग्राहकों की जैसी जिस पर श्रद्धा थी वो उसी भाव से पोस्टर खरीद रहे थे । सभी के भक्त भक्तिभाव से दर्शनों का लाभ उठा रहे थे ।

गुब्बारे पर मूंग की दाल से निशाना लगाया जा रहा था । सारे निशानची निशाना साध रहे थे। कारगिल के लिये बंदूक हाथ में उठानी चाहिये ऐसे गिरे विचारे मन में चाहे न आये पर श्रीदेवी के नाक, कान, होंठों पर जरूर फायर करेंगे । ले बेवफा । ठाँ । ठाँ । ठाँ । हम मर गये थे जो उस बोनी कपूर के साथ सेट हो ली । पीली शर्ट वाले ने पांच रूपये की दाल सुष्मिता सेन के सीने में उतार कर अपने कलेजे की आग ठंडी कर ली । कंबख्त बहुत दिलबर दिलबर करती फिरती है । नहीं सुधरी तो अगले दशहरे पर फिर बीस गोली सप्रेम अर्पण कर देगें । इसको कहते हैं दूसरे के सीने पर मूंग दलना ।

मेरी जेब में पड़ा इकलौता दस का नोट मेला देखने के लिये मचल रहा था । जिव्हा चटकारे लेना चाह रही थी और पेट कब्ज की याद में चेतवानी प्रसारित कर रहा था । पर जीत दस के नोट की हुई । अभी डकार लगाओ सवेरे झेला जायेगा मौकाये वारदात पर । वह दस रूपये इडली सांभर में डूब गये । लेकिन

सवेरे की चिंता शुरू हो चुकी थी । खैर देखा जायेगा । आखिर लवण भास्कर चूर्ण किस मर्ज की दवा है ।

अब मुझे चिंता हुई झूले के पास डेढ़ घंटे पहले युवतियों के साथ हुये मार्मिक छेड़–छाड़ की जिसकी सूचना गगनभेदी स्वर में अमृत लाउडस्पीकर वाला दे रहा था और पुलीस वालों से अपील की जा रही थी, वर्दी की दुहाई दी जा रही थी और आश्चर्य प्रकट किया जा रहा था कि पुलीस वालों के रहते यह काम दूसरे कैसे कर रहे हैं । घड़ी में समय देखा तो एक बज रहा था । घर की याद सताने लगी पर जात–जाते घटनास्थल का दौरा भी जरूरी था ।

झूले के पास महिलाओं, बच्चीयों, बच्चीनुमा युवतियों की भीड़ थी । उनके शुभचिंतक उनकी रक्षार्थ खड़े थे और बहुत से प्रेमीजन दो कांस्टेबलों को खड़ा देख हाथ खुजलाते खड़े थे । कोई भी इतनी खास नहीं थी पर फिर भी लोमहर्षक काण्ड सहर्ष हो चुका था ।

महिलाओं की नई पीढ़ी झूले पर चढ़ने के लिये युद्ध लड़ रही थी । किसी तरीके से संघर्ष कर के चार युवतियाँ झूले पर बैठीं तो अगले बीस सेकेण्ड उनकी दंतपंक्तियाँ चमकी फिर अचानक ये ख्याल आया कि पब्लिक उनके मुखारविंद को निहार रही है अतः इक्कीसवें सेकेण्ड में ही वे इतनी सीरियस हो गईं कि लगा नवाज शरीफ के तख्ता पलट से होने वाली चिंताओं की जिम्मेदारी गृह मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय और विदेश मंत्रालय की तरफ से इनको सौंप दी गई है । दस मिनट उन सबका निरीक्षण करने के बाद में घर चल दिया । पेट में इडली सांबर कुश्ती लड़ रहे थे और निद्रादेवी की आराधना का समय हो गया था ।